M11/2/ABHIN/SP1/HIN/TZ0/XX/T

22112307

International Baccalaureate®
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

HINDI B – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI B – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI B – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Friday 13 May 2011 (afternoon)
Vendredi 13 mai 2011 (après-midi)
Viernes 13 de mayo de 2011 (tarde)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1.
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'Épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la Prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

© International Baccalaureate Organization 2011

पाठांश क

सफलता की सीढ़ियां चढ़ती नन्ही तान्या

"मेरी मम्मी मेरे जन्मदिन पर मेरा फोटो छिपकर खींचती थी। पता चलने पर मैं खूब रोती थी। मालूम नहीं, मुझे बचपन में कैमरे से क्यों डर लगता था। लेकिन, अब नहीं डरती। अब मैं बड़ी हो गयी हूँ।" यह कहते हुए तेरह साल की तान्या की आंखें खुशी से चमकने लगती हैं। इस खुशी की वजह है। तान्या हाल ही में संपन्न हुए आई.पी.एल.3 टी-20* क्रिकेट टूर्नामेंट में बतौर कमेंट्रेटर अपनी चमक दिखा चुकी है। पूरे देश से हजारों बच्चों ने एक मुकाबले में हिस्सा लिया और उनमें से आठ बच्चों का चयन कमेंट्रेटर के रूप में किया गया था। गौतम गंभीर और वीरेन्द्र सहवाग की ज़बरदस्त फैन तान्या को महेन्द्र सिंह धोनी भी कुछ-कुछ पसंद हैं। बातूनी होने के कारण घर पर माँ उसे 'तोता' कह कर बुलाती हैं, तो पिता उसे 'तानु' कहते हैं।

चाइल्ड मॉडल, आर्टिस्ट तान्या सचदेव ने छोटी उम्र में पढ़ाई के साथ-साथ मॉडलिंग, म्यूज़िक वीडिओ तथा सीरियलों में काम करके अपनी एक अलग पहचान बनाई है। दस साल की छोटी उम्र में ही फैशन की दुनिया के टॉप फोटोग्राफर्स सुब्रो दास और राहुल दत्ता की पसंदीदा चाइल्ड आर्टिस्ट बन चुकी तान्या अमिताभ बच्चन, आमिर खान जैसे बड़े सितारों के साथ भी काम कर चुकी है।

तान्या के इतना प्रसिद्ध होने के बाद भी कभी मॉडलिंग को अपनी पढ़ाई पर हावी नहीं होने दिया। आठवीं कक्षा में पढ़ने वाली तान्या मूल रूप से दिल्ली की रहने वाली है। मॉडलिंग के अलावा एक्टिंग तथा डांसिग उसके अन्य शौक हैं।

बहुमुखी प्रतिभा की धनी तान्या ने छोटी उम्र में ही सफलता के शिखर को छूकर लोगों को हैरानी में डाल दिया है। लेकिन, उसका खुद का यह मानना है कि सफलता उसके लिए मंजिल नहीं सफ़र है, जिसके कई पड़ावों को उसे अभी पार करना है।

---

* आई.पी.एल.3 टी-20: इण्डियन प्रिमीयर लीग टवैण्टी-टवैण्टी

पाठांश ख

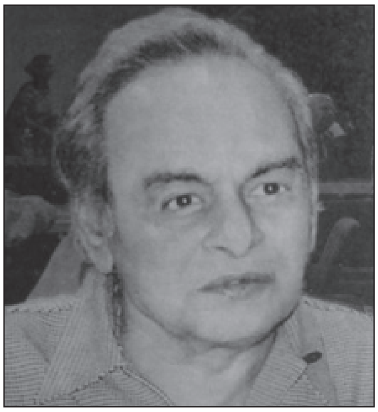

"अब गानों में पहले सी मिठास नहीं रही" - आनंदजी (संगीतकार)

60 और 70 के दशक के फ़िल्मी संगीत की मिठास आज भी बरकरार है तो उस की इकलौती वजह संगीतकारों का मेहनती या प्रतिभावान होना नहीं था, बल्कि आज के मुकाबले संगीतकारों में इतनी कड़ी प्रतिस्पर्धा थी कि किसी नए संगीतकार के स्थापित होने की बात कम ही लोग सोच पाते थे। गुणवत्ता वाले इन संगीतकारों के बीच दो नाम कल्याणजी-आनंदजी सम्मानजनक मुकाम पाने में कामयाब रहे थे। वर्ष 2000 में यह जोड़ी कल्याणजी के निधन के बाद टूटी तो आनंदजी समाज सेवा की तरफ मुड़ गए और आज भी सार्थक काम कर रहे हैं। 77 साल के बुज़ुर्ग आनंदजी में गज़ब का उत्साह और फुर्ती है। फिल्म इंडस्ट्री के नए तौर तरीकों पर टिप्पणी करने से वे स्वाभाविक रूप से कतराते हैं जिसे अपने पेशे का लिहाज़ कहना सटीक होगा। पेश हैं, उनसे बातचीत के कुछ अंश:

आप की कामयाबी का राज़ क्या है?
अपने काम के प्रति समर्पण को मैं सफलता का राज़ मानता हूँ। मैंने पूरे वक्त काम को बतौर शौक किया है। पैसा दूसरे नम्बर पर रखा पर उसकी अहमियत से इनकार या परहेज़ मुझे कतई नहीं।

पहले के मुकाबले आप संगीत में अब क्या बदलाव महसूस करते हैं?
देखिए, मौजूदा दौर तकनीक का है। इसका असर संगीत पर भी पड़ा है। ऐसे में पहले जैसा संगीत कैसे रह सकता है। मीडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण भी संगीत 'ओवर एक्सपोज़' होने लगा है।

आज के गानों के बारे में आप क्या कहेंगे?
आजकल कैसे भी गाने हों, फिल्म में फिट हो जाते हैं। पहले गाना फिल्म की कहानी के साथ चलता था, अब गाने की लाईनें ही पता नहीं चलतीं। फर्क तो बहुत देखने में आ रहा है। हमारे समय में कहानी की मांग और ज़रुरत पर गाने लिखे जाते थे, पार्श्व संगीत पर भी खासा ध्यान दिया जाता था। आजकल गानों से कविता और शायरी गायब होती जा रही है, गीतकार लोगों को लुभाने के लिए कुछ भी लिखे जा रहे हैं। गाने हिट भी हो रहे हैं। चूंकि इसकी मांग है इसलिए मैं इसे गलत भी नहीं कहता, मगर गानों में पहले सी मिठास नहीं रह गई है।

अब तक के अपने काम व उपलब्धियों से आप संतुष्ट हैं?
जी हां, हूं मुझे हर जगह पर्याप्त प्यार, मानसम्मान लोगों ने दिया है।

पाठांश ग

चलो गांव ही चलते हैं

मिट्टी के बर्तन में मंद-मंद आंच पर पका शुद्ध पौष्टिक भोजन। ठहरने को साफ़-सुथरा सा एक घर, जहाँ प्रदूषण का नामोनिशान नहीं। देखने को रंग-बिरंगी प्रकृति का सौन्दर्य। शांति का अहसास देती हवाएं और चिड़ियों की चहचहाहट!

शहरी ज़िन्दगी की आपाधापी से समय निकाल कर ऐसे मौहोल में जाने की बेताबी अब बहुतों में दिखाई देने लगी है। देवेन श्रीवास्तव मारुती उद्योग और हीरो होंडा जैसी कंपनियों में उच्चाधिकारी रहे। परन्तु, बड़ी बड़ी नौकरियां भी मानसिक सुकून न दे पाईं तो वे दिल्ली से 40 किलोमीटर दूर एक 'ग्रामीण रिसॉर्ट 'शुरू करने में लग गए। 15 वर्ष पहले शुरू किए गए इस काम से आज वे ख़ुश हैं। वे बताते हैं कि 1995 में जब उन्होंने ग्रामीण पर्यटन के क्षेत्र में उतरने का निर्णय किया, तब भारत के लिए यह नए तरह का विचार था। आज बड़ी संख्या में लोग सुकून की चाह में गाँवो की ओर आ रहे हैं। अमरीका में भूदृश्य शिल्पकार रहे अतुल वशिष्ठ बताते हैं, "भविष्य में पर्यटन उद्योग में एक महत्वपूर्ण हिस्सा ग्रामीण पर्यटन का होगा।"

ग्रामीण पर्यटन के तौर पर जयपुर (राजस्थान) के नज़दीक समोध गाँव ने खासी ख्याति कमाई है। यहाँ बनावटी 'रुरल रिसॉर्ट' की बजाय रिसॉर्ट की शक्ल में वास्तविक 'रीयल विलेज' दिखाई देगा। पांच साल पहले एक छोटे से एनजीओ 'कला, साहित्य मंच संस्था' ने ग्रामीणों के सशक्तीकरण, रोज़गार और उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाने के उद्देश्य से दो दर्जन गाँवों का चयन कर यह काम शुरू किया था। इसकी बुनियाद रखने वाले इस संस्था के सचिव कमल किशोर बताते हैं, "शुरू में नतीजे उत्साहवर्धक नहीं रहे, पर पिछले दो साल से बढ़िया परिणाम आए हैं। 2600 पर्यटकों का हमने स्वागत किया है, जिसमें 1600 विदेशी सैलानी थे।"

कुछ इसी तरह नैनीताल से 50 किलोमीटर दूर सोनापानी में 'हिमालयन विलेज' की संचालिका दीपा पाठक ने 20 एकड़ क्षेत्रफल में 12 ऐसे कॉटेज बनाए हैं जहाँ पहुँचकर सैलानी कुछ अलग ही तरह का सुकून महसूस करेंगे। दीपा बताती हैं, "दिल्ली जैसे महानगरों की भागदौड़ से थके हुए लोग यहाँ प्रकृति की गोद में आकर एक अलग ही तरह के आराम और अनुभव से गुजरतें हैं।"

पाठांश घ

हमारी नींद- हमारे सपने

नींद किसे प्यारी नहीं होती? पर्याप्त शारीरिक श्रम तथा चिंता-मुक्त रहना अच्छी नींद की संभवतः पहली शर्त है। नींद संपूर्ण अचेतन की अवस्था है, जिससे हम मनुष्य 24 से 25 घंटे की अवधि में सामान्यतः एक बार अवश्य गुज़रते हैं। सोने और जागने के समय भी नियमित होने चाहिए। शयन कक्ष का नियंत्रित तापक्रम नींद के दृष्टिकोण से अच्छा है। बहुत ठण्ड या गर्मी नींद में बाधा उपस्थित करते हैं। हम सोते समय निद्रा की क्रमशः पांच अवस्थाओं से गुज़रते हैं। पहली अवस्था हल्की नींद की स्थिति होती है जिसे हम कच्ची नींद या तन्द्रा भी कहतें हैं। दूसरी अवस्था में हमारे मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाली विद्युत तरंगे धीमी पड़ने लगती हैं। तीसरी अवस्था में पहुँचकर डेल्टा तरंगो का उत्पादन शुरू हो जाता है और चौथी अवस्था में तो मस्तिष्क केवल डेल्टा तरंगो का ही उत्पादन करता है। तीसरी एवं चौथी अवस्था गहन निद्रा होती है। नशीले पदार्थ हमें गहन निद्रा से वंचित करते हैं इसलिए कैफीन युक्त पेय अथवा शराब जैसे नशीले पदार्थ अभिशाप साबित हो सकते हैं। देर तक बिना भरपूर नींद के जगे रहने का दुष्प्रभाव स्मरण शक्ति तथा शारीरिक क्षमता में कमी के रूप में परिलक्षित होता है। 20 से 30 मिनट का नियमित व्यायाम करना अच्छी नींद में सहायक है। नींद न आने की स्तिथि में बिस्तर पर लेटे रहने से कोई लाभ नहीं होता। उठ कर हल्के फुल्के काम में लग जाने पर थोड़ी ही देर में नींद आ जाती है। कुछ विशेषज्ञों के अनुसार निद्रा हमारी स्नायु कोशिकाओं को कुछ देर के लिए विश्राम तथा क्षतिपूर्ति का अवसर प्रदान करती हैं। ये भी धारणा है कि सोने से पूर्व गुनगुने पानी से नहाना या पढ़ना, जिससे मन पूरी तरह से आराम की अवस्था में आ जाए- अच्छी नींद की प्रक्रिया में सहायक है। अतः भरपूर सोईये तथा सुहाने सपने भी अवश्य देखिये पर बिस्तर पर जाते समय मुँह मत ढकिये रौशनी का स्रोत अवश्य बंद कर दीजिऐ। शरीर में प्राणवायु की मात्रा कम होने तथा तेज़ रोशनी से भी नींद में व्यवधान पड़ सकता है।